परमेश्वर ने बगीचे में पेड़ ही क्यों रखे—कुछ और क्यों
नहीं?

बहुत-से लोग यह प्रश्न करते हैं: परमेश्वर ने अदन की वाटिका में जीवन और मृत्यु को दर्शाने के लिए पेड़ों का ही उपयोग क्यों किया? कोई और वस्तु—जैसे चट्टान—क्यों नहीं, जो देखने में अधिक स्थायी और प्रतीकात्मक लगती है?

पेड़ों का महत्व

इस प्रश्न का उत्तर स्वयं पेड़ों के स्वभाव में छिपा है। यद्यपि कई वस्तुएँ स्थायित्व या मजबूती का प्रतीक हो सकती हैं, पर पेड़ एक विशेष ढंग से जीवन और मृत्यु—दोनों को दर्शाते हैं। इसका मुख्य कारण है उनका दीर्घकाल तक जीवित रहना और फल देना।

सभी जीवित प्राणियों में पेड़ सबसे अधिक समय तक जीवित रहते हैं। हाथी लगभग 80 वर्ष तक, तोते और कौवे लगभग 90 वर्ष तक, और कछुए लगभग 200 वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। लेकिन पेड़ हज़ारों वर्षों तक जीवित रहते हैं। आज भी ऐसे पेड़ हैं जो 2,000 वर्षों से अधिक पुराने हैं और फिर भी फल दे रहे हैं।

पेड़ों की एक और अद्भुत बात यह है कि वे एक ही स्थान पर जड़ें जमाए रहते हैं और फिर भी लगातार बढ़ते-फलते रहते हैं। सदियों तक उनका स्थान न बदलना और निरंतर फल देना—यह किसी अनन्त वास्तविकता की ओर संकेत करता है: या तो अनन्त जीवन, या फिर परमेश्वर से अनन्त अलगाव।

अब यदि हम एक चट्टान पर विचार करें—वह भी उतने ही समय तक, या उससे भी अधिक, टिक सकती है; पर वह निर्जीव है। वह न बढ़ती है, न फल देती है, न परिवर्तन लाती है। इस अर्थ में, वह आत्मिक मृत्यु का अधिक चित्र प्रस्तुत करती है—एक स्थिर और निष्फल अवस्था।

इसलिए अदन की वाटिका में पेड़ों का चुनाव कोई संयोग नहीं था। परमेश्वर यह गहरी सच्चाई दिखा रहे थे कि उसके साथ हमारा संबंध—जो जीवन या मृत्यु की ओर ले जाता है—अनन्त परिणाम रखता है।

जीवन का वृक्ष और भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष

उत्पत्ति 2:9 में लिखा है:

“और यहोवा परमेश्वर ने भूमि में से हर एक प्रकार का वृक्ष उगाया, जो देखने में मनभावना और खाने में अच्छा था; और बगीचे
के बीच में जीवन का वृक्ष, और भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष भी था।”
(उत्पत्ति 2:9 – हिंदी बाइबल, संशोधित संस्करण)

ये दोनों पेड़ केवल वनस्पति नहीं थे। वे आत्मिक चिन्ह

थे—परमेश्वर के सत्य की जीवित तस्वीरें। एक वृक्ष अनन्त जीवन का प्रतीक था, और दूसरा आत्मिक मृत्यु की ओर ले जाने वाला।

जब आदम और हव्वा ने भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया (उत्पत्ति 3), तो पाप और मृत्यु मानव इतिहास में प्रवेश कर गए। उनके चुनाव के कारण मानवता जीवन के वृक्ष से—और स्वयं परमेश्वर से—अलग हो गई।

जीवन का वृक्ष—यीशु मसीह

पर कहानी अदन पर समाप्त नहीं होती।

पूरे पवित्रशास्त्र में हम देखते हैं कि जीवन के वृक्ष का विषय फिर से प्रकट होता है—केवल एक वृक्ष के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में। वह व्यक्ति है यीशु मसीह।

1 कुरिन्थियों 1:23–24 में प्रेरित पौलुस लिखता है:

“हम तो क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं; यहूदी
तो उसे ठोकर का कारण समझते हैं और अन्यजाति उसे मूर्खता; परन्तु जो बुलाए हुए हैं—चाहे यहूदी हों या यूनानी—उनके लिये मसीह परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर की बुद्धि है।”

(1 कुरिन्थियों 1:23–24)

अब नीतिवचन 3:18 पर ध्यान दीजिए:

“जो उसे पकड़ लेते हैं, उनके लिये वह जीवन का वृक्ष है; और जो
उसे थामे रहते हैं, वे धन्य हैं।”
(नीतिवचन 3:18)

यदि मसीह परमेश्वर की बुद्धि हैं, और बुद्धि को जीवन का वृक्ष कहा गया है, तो बाइबिल के अनुसार यह निष्कर्ष स्पष्ट है:
यीशु मसीह ही जीवन का वृक्ष हैं।

वही अनन्त जीवन का स्रोत हैं। वही वह सब पुनः स्थापित करते हैं जो अदन में खो गया था।

यीशु—अनन्त जीवन का स्रोत

नया नियम इस सत्य की बार-बार पुष्टि करता है:

प्रेरितों के काम 3:15 — “तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया।”

यूहन्ना 10:10 — “मैं इसलिये आया हूँ कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।”

यूहन्ना 14:6 — “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आता।”

यूहन्ना 3:16 — “जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”

यूहन्ना 6:47 — “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जो विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।”

यीशु के बाहर अनन्त जीवन नहीं है। वही उत्पत्ति में बताए गए जीवन के वृक्ष की पूर्ति हैं, और हम उन्हें फिर से प्रकाशितवाक्य 22:2 में देखते हैं:

“नगर की सड़क के बीचों-बीच और नदी के इस पार और उस पार जीवन
का वृक्ष था, जो बारह प्रकार के फल देता था…”
(प्रकाशितवाक्य 22:2)

पूरी बाइबिल—अदन से लेकर अनन्तकाल तक—जीवन के वृक्ष तक हमारी पहुँच के चारों ओर घूमती है; और अंततः यह पहुँच यीशु मसीह तक पहुँच है।

क्या आपने जीवन का वृक्ष पाया है?

अब प्रश्न केवल धर्मशास्त्रीय नहीं, बल्कि व्यक्तिगत है:

क्या आपने वह जीवन पाया है जो यीशु देता है?

यदि नहीं, तो आज आपकी नई शुरुआत हो सकती है।
उसे ग्रहण कीजिए।
उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास कीजिए।
उसे आपको नई सृष्टि बनाने दीजिए।
उसके नाम में बपतिस्मा लीजिए (प्रेरितों के काम 2:38) और उसके साथ चलना शुरू कीजिए।

क्योंकि यीशु मसीह —जीवित वृक्ष —में केवल जीवन ही नहीं , बल्कि अनन्त जीवन है।

शालोम।

Share on:
WhatsApp

Print this post